रिकार्ड–आखिर वो दिन आया .....ओमशांति प्रातःक्लास 11–3–67
बच्चे यह जानते हैं ओमशांति माना ही अहम आत्मा। मम शरीर। आत्मा है अविनाशी।शरीर है विनाशी। आत्मा को ही शरीर लेकर पार्ट बजाना है ;क्योंकि यह ड्रामा है ना। अभी तो इस ड्रामा को, सृष्टि चक्र को और इस सृष्टि चक्र को जानने वाले को तुम जानते हो ;क्योंकि जानने वाले को रचता ही कहेंगे। रचता और रचना को और कोई नहीं जानते हैं। भल पढ़े–लिखे हुये बड़े2 विद्वान ,पंडित हैं। आते हैं यहां। उनको अपना ही घमंड तो रहती ही है ना ;परंतु उनको यह पता नहीं है। गाते भी हैं ज्ञान भी भक्ति और वैराग। इसको भी नहीं जानते हैं। सन्यासियों को वैराग आता ही है घर से। हट एंड होम छोड़ते हैं ना। गवर्मेंट को भी कहते हैं कि हम साधु समाज हैं। उनके मठपंथ ढेर हैं। साधुओं में भी किस्म2 के होते हैं। उनको भी उंच और नीच की बहुत ईर्ष्या रहती है।यह उंच कुल का है।यह मध्यम कुल का है।इस पर उनका बहुत चलता है। कुम्भ के मेले में भी उनका बहुत झगड़ा हो जाता है कि पहले2 किसकी सवारी निकले। इसी बात पर बहुत लड़े थे।फिर गवर्मेंट की पुलिस ने आकर छुड़ाया। यह भी देह अभिमान हुआ ना। दुनियां में जो भी मनुष्य मात्र हैं वो हैं देहअभिमानी। तुमको तो अभी देही अभिमानी बनना है।बाप कहते हैं कि देह अभिमान छोड़कर अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही पतित बनी है। उसमें खाद पड़ी है। आत्मा ही सतोप्रधान रजोप्रधान बनती है। जैसे आत्मा वैसा ही शरीर मिलता है।आत्मा सतोप्रधान तो शरीर भी सतोप्रधान ही मिलता है। कृष्ण की आत्मा सुंदर है तो शरीर भी बहुत सुंदर मिलता है। इनके शरीर में बहुत कशिश होती है। पवित्रात्मा ही कशिश करती है ना। ल.ना. की इतनी महिमा नहीं है जितनी कि कृष्ण की है ;क्योंकि कृष्ण तो पवित्र छोटा बच्चा है।यहां फिर कहते हैं कि छोटा बच्चा औ महात्मा एक समान है।महात्मा तो फिर भी जीवन का अनुभव करके फिर विकारों को छोड़ते हैं। घृणा आती है ना। मगर बच्चा तो है ही पवित्र। उनको उंच महात्मा समझते हैं। वो तो बाप ने समझाया है यह निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी भी कुछ थमात हैं जैसे मकान आधा पुराना होता है तो फिर मरम्मत की जाती है। सन्यासी भी मरम्मत करते हैं। पवित्र रहने से भारत (थमा) रहता है। भारत जैसा पवित्र खंड और इस जैसा धनवान खंड कोई और हो नहीं सकता है। अब बाप तुमको रचता और रचना की आदि–मध्य–अंत का राज समझाते हैं ;क्योंकि यह बाप भी है, टीचर भी है तो गुरू भी है। गीता में तो कृष्ण भगवानोवाच लिख दिया है।इनको कब बाबा कहेंगे क्या?अथवा पतित–पावन कहेंगे क्या??जब मनुष्य पतित–पावन कहते हैं तो कृष्ण को याद नहीं करते हैं।वो तो भगवान को ही याद करते हैं।फिर भी कह देते हैं पतित–पावन सीता–राम ,रघुपति राघव राजाराम.....कितना..... है। (शास्त्रों) के अक्षरों में कितना अनर्थ है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को आकर सभी वेदों–शास्त्रों का सार सुनाता हूँ यथार्थ रीति से। पहले2 मुख्य बात समझाते हैं कि तुम अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तुम हो भाई2 ,ब्रह्मा की सन्तान कुमार–कुमारियां तो फिर भाई–बहन हो गये ना।यह बुद्धि में याद रहे। असल में आत्मायें भाई2 हैं। फिर यहां शरीर में आने पर भाई–बहन बनते हो एक तरफ तो कहते भी हैं ब्रदरहुड।फिर सर्वव्यापी कहने से फादरहुड हो जाता है।इतनी भी बुद्धि समझने की नहीं है। वो हम आत्माओं का बाप है तो हम ब्रदर्स ठहरे ना। फिर भी सर्वव्यापी कैसे कहते हैं?वर्सा तो बच्चे को ही मिलेगा ना।फादर को तो नहीं मिलेगा ना। बाप से बच्चे को वर्सा मिलता है। ब्रह्मा भी शिवबाबा का बच्चा है ना।इनको भी वर्सा उनसे मिलता है। तुम हो जाते हो पोत्रे–पोत्रियां।तुमको भी हक है। तुम आत्मा के रूप2 में सब बच्चे हो।फिर शरीर में आते हो तो भाई–बहन कहते हो।और कोई नाता नहीं है। मेल–फीमेल दोनों ही कहते भी हैं कि ओ गॉड फादर। तो भाई–बहन हुये नां। भाई–बहन होते ही है तब जबकि बाप संगम पर आकर रचना रचते है।स्त्री–पुरुष की नजर बहुत मुश्किल से निकलती है। इसलिए ही स्त्री को

देखने से ही गिर पड़ते हैं। बाप कहते हैं कि तुमको देही अभिमानी बनना है। बाप के बच्चे बनेंगे तब ही वर्सा मिलेगा। मामेकम याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान बने बिना तुम नापास मुक्ति जीवनमुक्ति में जा नहीं सकेंगे। यह मुक्ति सन्यासी आदि कब नहीं बतावेंगे।वो ऐसे कब कहेंगे नहीं कि अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करो।बाप को कहा जाता है परमपिता परमात्मा सुप्रीम। आत्मा तो सबको ही कहा जाता है ना ;परंतु उनको परमआत्मा कहा जाता है। वो बाप कहते हैं बच्चों मैं आया हुआ हूँ तुम बच्चों के पास। हमको मुख तो चाहिए ना बोलने लिए। आजकल देखो जहां–तहां गउमुख जरूर रखते हैं। फिर कहते हैं गउमुख से अमृत निकलता है।वास्तव में अमृत तो कहा ही जाता है ज्ञान को। ज्ञानामृत मुख से ही निकलता है। पानी की तो इसमें बात ही नहीं है। यह गउ माता भी है। बाबा इनमें प्रवेश हुआ है।बाप ने इन द्वारा तुमको अपना बनाया है। इसमें से ज्ञान निकलता है।उन्होंने तो पत्थर का बनाकर उसमें मुख बनाकर दिखाया है कि पानी निकलता है।वो तो भक्ति ,झूठ हो गया ना। यथार्थ बातें तो तुम्हीं जानते हो। भीष्म पितामह आदि को तुम कुमारियों ने ही ज्ञान बाण मारे हैं। तुम हो ब्रह्मा कु.कु. । तो कुमारियां किसी की तो होंगी ही ना। अधर कुमार और कुमारी दोनों मंदिर हैं।प्रैक्टिकल में तुम्हारा यादगार मंदिर है ना। अब बाप बैठ समझाते हैं कि तुम जबकि ब्र.कु.कु. हो तो क्रिमिनल एसाल्ट हो नहीं सकता। नही तो बहुत कड़ी सजा हो जावेगीं देह अभिमान में आने से वो भूल जाता है कि हम तो भाई–बहन है। यह भी ब्रह्माकु., मैं भी ब्रह्माकु., तो विकार की दृष्टि जा नहीं सकती।कई स्त्रियां भी पूतनायें सुपनखायें निकल आती हैं। महाभारत की लड़ाई के समय में ही पूतनायें ,सूपनखायें आदि गाई हुई हैं।तो इस समय पूतनायें,सूपनखायें, अकासुर, बकासुर आदि सभी है।यह सब नाम तो आसुरी सम्प्रदाय के हैं। विकार बिना रह नहीं सकते हैं तो विघ्न डालते हैं। अब तुम ब्र.कु.,ब्र. कु. को वर्सा मिलता है बाप से।बाप की श्रीमत पर ही चलना है।पवित्र बनना है। यह है इस विकारी मृत्युलोक का अंतिम जन्म। यह भी कोई जानते नहीं हैं। अमरलोक में विकार की कोई बात होती ही नहीं है। इनको कहा ही जाता है सतोप्रधान सम्पूर्ण निर्विकारी।यहां है तमोप्रधान सम्पूर्ण विकारी। गाते भी हैं कि वो सम्पूर्ण निर्विकारी, हम तो विकारी पापी है। सम्पूर्ण निर्विकारी की पूजा करते हैं। बाप ने समझाया है तुम भारतवासी ही पूज्य सो फिर पुजारी बनते हो। पहले सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी फिर आधा कल्प के बाद होता है रावण का राज्य। इस समय भक्ति का बहुत प्रभाव है। भक्त भगवान को याद करते हैं। आकर भक्ति का फल दो। भक्ति में क्या हाल हो गया है।भक्ति से दुर्गति हो गई है। इनसे निकालने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। निकालते ही नहीं हैं।गीता में भी भगवान कृष्ण का नाम डालकर झूठी बना दी है। तुम कहते हो गीता शिवबाबा ने सुनाई है।वास्तव में मुख्य तो है ही गीता।बाप ने समझाया है कि धर्मशास्त्र भी चार हैं। एक तो है डीटीज्म। इसमें ब्राह्मण, देवता ,क्षत्रिय तीनों ही आ जाते हैं। बाप ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं। ब्राह्मणों की चोटी है संगमयुग के। तुम ब्राह्मण अभी पुरुषोत्तम बन रहे हो। ब्राह्मण ही फिर देवता बनते हैं। वो ब्राह्मण भी हैं विकारी। वो भी इन ब्राह्मणों के आगे नमस्ते करते हैं। ब्राह्मण देवी देवताय नमः कहते हैं ;क्योंकि समझते हैं कि वो ब्रह्मा की सन्तान थे। हम तो ब्रह्मा की सन्तान नहीं हैं। अब तुम ब्रह्मा की सन्तान हो।तुमको सब नमः करेंगे।तुम फिर देवी–देवता बनते हो। अब तुम ब्र.कु.कु. बन रहे हो। फिर बनोगे दैवी कुमार कुमारियां।यह तुम्हारा अमूल्य जीवन है। इस समय तुम जगत की मातायें गाई जाती हैं। तुम हद से निकलकर बेहद में आई हो। तुम जानते हो हम ही इस जगत का कल्याण करने वाले हैं।तो हर एक जगतअम्बा जगतपिता ठहरे। इस नर्क में मनुष्य बहुत दुःखी हैं। हम उनकी रुहानी सेवा करने आये हैं। हम उनको स्वर्गवासी बनाकर ही छोड़ेंगे। तुम हो सेना। इसको युद्धस्थल भी कहते हैं। यादव–कौरव

पांडव भी हैं। योरुप वासियों को यादव, भारतवासियों को कौरव कहा जाता है।कौरव पांडव इकट्ठे रहते हैं। भाई2 है नां। अब तुम्हारी युद्ध भाई–बहनों से नहीं है।तुम्हारी युद्ध है ही रावण से। भाई–बहनों को तो तुम उठाते हो मनुष्य से देवता बनाने के लिए। तो बाप समझाते हैं देह सहित सभी देह के सम्बंध छोड़ने हैं।यह है पुरानी दुनियां।कितने बड़े2 ..... (कैनाल्स)आदि बनाते हैं ;क्योंकि पानी नहीं है। प्रजा बहुत बढ़ गई है।वहां तुम तो रहते ही बहुत थोड़े हो।नदियों में पानी भी ढेर, अनाज भी ढेर रहता है।यहां इस धरती पर है 500 करोड़ मनुष्य। वहां सारी धरती पर ही शुरू में होते हैं 9/10लाख।और कोई खंड होता ही नहीं है।तुम थोड़े ही रहते हो।तुमको कहीं जाने करने की भी दरकार नहीं है।वहां तो सदैव है ही बहारी मौसम। पांच तत्व भी कहीं तकलीफ नहीं देते हैं।ऑर्डर में रहते हैं। दुःख का नाम ही नहीं। वहां है ही बसंत। फिर जब देवतायें वाम मार्ग में गिरते हैं तो फिर रावण का राज्य हो जाता है। देवताओं को कहा ही जाता है सर्वगुण सम्पन्न.....इस समय है ही आसुरी सम्प्रदाय।बाप कहते हैं बिल्कुल ही एप्स बुद्धि बन गये हैं।ऐसे एप्स के उप रनाम फिर रख दिया है श्री फलाना। मुसलमानों को भी श्री का टाइटल तो क्रिश्चियन्स को भी श्री का टाइटल दे दिया है। कब श्री तो कब फिर मिस्टर लगा देते हैं। श्री भूल जाता है ;क्योंकि श्री नहीं तो मिनिस्टर ही कह देते हैं। मिनिस्टर अक्षर भी अंग्रेजी का है। अब तो अक्सर ही दास वा मल नाम रख देते हैं। दास हैं देवताओं के पुजारी।आजकल तो बंदरों पर भी श्री का ताज रख दिया है। श्री तो यह ल.ना. है ना। तुम समझ गये हो हम डबल ताजधारी बनते हैं, फिर सिंगल ताज वाले बनते हैं।सतयुग में पवित्रता की यह निशानी है। देवतायें तो सच्चे2 पवित्र हैं। यहां पवित्र कोई है ही नहीं। जन्म तो फिर भी भ्रष्टाचार से ही लेते हैं ना।इसीलिए ही इसको भ्रष्टाचारी दुनियां कहा जाता है। सतयुग है श्रेष्ठाचारी। विकारी को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। बच्चे जानते हैं कि सतयुग में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था।अब अपवित्र हो गया है।अब फिर पवित्र श्रेष्ठाचारी दुनियां बननी है। सृष्टि का चक्र फिरता है ना। परमपिता परमात्मा को ही पतित–पावन कहा जाता है। वो भी कहते हैं कि हमको शरीर का आधार लेना पड़ता है। शरीर बिना मुख से शिक्षा ही कैसे दूं?प्रेरणा से कोई शिक्षा नहीं दी जाती है। प्रेरणा माना ही विचार। और कोई बात नहीं।भगवान प्रेरणा से कुछ नहीं करते हैं। बाप तो बच्चों को पढ़ाते हैं। प्रेरणा से पढ़ाई थोड़े ही हो सकती है। सिवाय बाप के सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का राज कोई समझा नहीं सकते हैं।बाप को ही नहीं जानते हैं। कोई कहते लिंग है। कोई कहते हैं अखण्ड ज्योति है। कोई कहते हैं ब्रह्म ही ईश्वर है। तत्व ज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी है ना। शास्त्रों में तो बहुत गपोड़े लगा दिये हैं। 84लाख जन्म अगर होते तो कल्प की आयु बहुत लम्बी चाहिए।कोई हिसाब ही निकल नहीं सकता है।वो तो सतयुग को ही लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं सारी सृष्टि का चक्र ही 5000वर्ष का है। 84लाख जन्मों के लिए समय भी तो उतना ही चाहिए ना।यह शास्त्र आदि सब हैं भक्तिमार्ग के लिए। कितने गपोड़े हैं। बाप कहते हैं मैं आकर तुमको इन सब शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। यह सब भक्तिमार्ग की सामिग्री है। इनसे कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। मैं जब आता हूँ तब ही सबको ले जाता हूँ। मुझे तो बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ। पावन बनाकर हमको पावन दुनियां में ले जाओ। फिर भी यह धक्के क्यों खाते ही ढूंढने के लिए।कितना दूर2 पहाड़ों आदि पर जाते हैं। आजकल तो कितने ही मंदिर यूंह ी खाली पड़े हैं। कोई भी जाता नहीं है। अब तुम बच्चे उंच ते उंच (बाप) की बायोग्राफी को भी जान गये हो।बाप बच्चों को सब कुछ देकर फिर 60वर्ष बाद वानप्रस्थ में बैठ जाते हैं। यह रसम भी अभी की है। त्यौहार भी सभी इसी समय के ही हैं। तुम जानते हो कि अब हमस ंगम पर खड़े हैं।रात के बाद फिर दिन होगा। अब तो घोर अंधेरा है। कोई में भी बुरी नजर नहीं जानी है तुम्हारी।ओम।